जॉन विल्सन एज्युकेशन सोसायटी द्वारा संचालित

विल्सन महाविद्यालय (स्वायत्त)

नैक द्वारा 'ए' ग्रेड पुन:मान्यता प्राप्त, मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा सर्वश्रेष्ठ कॉलेज पुरस्कार (2019-2020) प्राप्त

हिंदी-विभाग

एवं

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय: भारतीय संस्कृति की समृद्धि में हिन्दी भाषा एवं साहित्य की भूमिका

दिन एवं दिनांक: बुधवार, दिनांक 07 फरवरी, 2024

समय: सुबह 8:30 से सायं 4:30 बजे तक

स्थान: ए. व्ही. रूम, विल्सन कॉलेज, गिरगाँव चौपाटी, मुम्बई

पंजीकरण (रजिस्ट्रेशन) लिंक : https://forms.gle/QdndTb2CA2KXQ4wH9

आप इस संगोष्ठी में सादर आमंत्रित हैं।

विल्सन महाविद्यालय के संबंध में:

विल्सन कॉलेज पश्चिम भारत के सबसे पुराने महत्त्वपूर्ण उच्च शिक्षा संस्थानों में से एक है। इसकी स्थापना सन् 1832 में प्रसिद्ध स्कॉटिश मिशनरी रेव. डॉ. जॉन विल्सन ने की थी। इन्होंने भारत में शिक्षा के विकास के माध्यम से देश के विकास में अपना अह्म, अक्षुण्ण और अग्रणी योगदान दिया है।

विल्सन कॉलेज का मिशन विद्यार्थियों में समकालीन संवेदनशीलता विकसित करना, उन्हें वैश्विक नागरिक के रूप में तमाम चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना, नैतिक रूप से ईमानदार, सामाजिक रूप से सजग, जागरूक, प्रतिबद्ध, आध्यात्मिकता की ओर उत्प्रेरित और बौद्धिक रूप से प्रशिक्षित करना है। विल्सन कॉलेज अपने मिशन-विजन को सर्वोपरि रखते हुए, उदारता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की समृद्ध परंपरा को बढ़ाते हुए, शिक्षा के उच्च स्तर को निरंतर बनाए रखने के साथ-साथ अधिक से अधिक छात्रवृत्ति से जरूरतमंद विद्यार्थियों को लाभांवित करने का सार्थक प्रयास करता रहा है। इस महाविद्यालय के प्रसिद्ध विद्यार्थियों में देश के पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई, भारत रत्न पी. वी. काने, भारत रत्न धोंडो केशव कर्वे, दिलीप सरदेसाई समेत देश के अनेक प्रतिष्ठित विद्वान हैं, जिन्होंने जीवन के विविध क्षेत्रों में नि:स्वार्थ और समर्पित भाव से राष्ट्र निर्माण में अपना अतुलनीय योगदान देकर आने वाली पीढ़ी को प्रेरित किया है।

विल्सन कॉलेज में कला, विज्ञान, कॉमर्स, मास मीडिया, बी.एम.एस., बी.ए.एफ., बी.एस.सी.आई.टी. में स्नातक, रसायन-विज्ञान, सूक्ष्मजीव-विज्ञान, अंग्रेजी में स्नातकोत्तर एवं पीएचडी. के साथ ही हिंदी में पीएचडी की शिक्षा प्रदान की जाती है। विल्सन कॉलेज को लगातार तीन चक्रों के लिए राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यापन परिषद द्वारा 'ए' रेटिंग एवं मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा सर्वश्रेष्ठ कॉलेज पुरस्कार (2019-2020) प्रदान किया गया है।

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के संबंध में:

भारतीय संविधान में देश की प्रशासनिक व्यवस्था हेतु हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया, साथ ही यह भी व्यवस्था की गई कि भारत के सभी प्रदेशों के शासन-प्रशासन की भाषा वहाँ की प्रांतीय भाषा होगी। इस प्रकार भारत की संघ सरकार की राजभाषा-हिन्दी तथा राज्यों के प्रशासन की भाषा वहां की प्रादेशिक भाषाएं होंगी, जैसे महाराष्ट्र राज्य की मराठी, गुजरात की गुजराती, कर्नाटक की कन्नड आदि। सरकारी स्तर पर यह निर्णय लिया गया कि चूँकि हिन्दी देश की संपर्क भाषा है और देश ही नहीं, अपितु विश्व में यह सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। अत: इसके विकास और प्रचार-प्रसार हेतु सभी प्रदेश कार्य करेंगे।

इस संकल्प को दृढ़ता से ध्यान में रखते हुए महाराष्ट्र सरकार द्वारा वर्ष 1986 में महाराष्ट्र राज्य में हिन्दी भाषा तथा साहित्य के संवर्धन हेतु महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी की स्थापना की गई। इसका उदेश्य महाराष्ट्र राज्य में हिन्दी भाषा तथा साहित्य के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहन देना, महाराष्ट्र राज्य की राजभाषा मराठी तथा हिन्दी साहित्य के बीच साहित्यिक तथा सृजनशील विधाओं का आदान प्रदान करना, हिन्दी में शोध निबंधों, प्रबंधों तथा स्तरीय ग्रंथों एवं साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रकाशन में सहयोग देना तथा आर्थिक अनुदान, मराठी भाषी हिन्दी के विद्वानों तथा साहित्यकारों अथवा महाराष्ट्र के हिन्दी लेखकों पत्रकारों, साहित्यकारों को पुरस्कृत करना; राज्य में हिन्दी भाषा एवं साहित्य के संवर्धन हेतु संगोष्ठी, परिसंवाद, सम्मेलन तथा प्रदर्शनी आदि का आयोजन करना है। हिन्दी साहित्य के विकास के साथ-साथ, हिन्दी अकादमी संपूर्ण महाराष्ट्र में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए भी काम करती है। महाराष्ट्र के शहरों-गांवों के विद्यालयों, महाविद्यालयों में हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार तथा उसमें प्रवीणता प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जिसमें छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। इससे उनका हिंदी के प्रति लगाव एवं प्रेम बढ़ता है और वे अपनी मातृभाषा के साथ-साथ देश की राजभाषा, संपर्क भाषा में प्रवीणता प्राप्त करके अपना ज्ञानवर्धन करते हैं।

हिन्दी-विभाग के संबंध में:

विल्सन महाविद्यालय में हिंदी-विभाग वर्ष 1955 में स्थापित हुआ था। इसे त्रिभाषा सूत्र के तहत एक अनिवार्य भाषा पाठ्यक्रम के रूप में शुरू किया गया था। डॉ. स्वामीनाथ शर्मा (1955-1974) हिंदी-विभाग के पहले व्याख्याता एवं विभागाध्यक्ष थे। बॉम्बे विश्वविद्यालय ने उन्हें दो डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया था - पीएच.डी. (बिना शोध निर्देशक के) और डी. लिट. (बॉम्बे विश्वविद्यालय के शताब्दी-लंबे इतिहास में यह सम्मान पाने वाले दूसरे व्यक्ति)। डॉ. स्वामीनाथ शर्मा की सेवानिवृत्ति के बाद वर्ष 1974 में प्रो. श्रीकांत कोटक (1962 में नियुक्त) हिंदी-विभागाध्यक्ष बने। इसके बाद विभाग का प्रबंधन श्रीमती मंजुला देसाई (1974 में नियुक्त) और डॉ. उषा कीर्ति राणावत (1977 में नियुक्त)

के नेतृत्व में किया गया। डॉ. उषा कीर्ति राणावत ने हिंदी-विभाग को गतिमान बनाते हुए शोधकार्य को बढ़ावा दिया। इनके निर्देशन में छह शोधार्थियों ने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। जून 2015 में उनकी सेवानिवृत्ति के पश्चात डॉ. सत्यवती चौबे ने विभाग का कार्य भार संभाला, अब इनके निर्देशन में चार शोधार्थी शोध कार्य कर रहे हैं। हिंदी विभाग निरंतर विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करता रहा है, जिसमें विद्यार्थी बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं।

संगोष्ठी के संबंध में:

भारतीय संस्कृति देश की एक अमूल्य विरासत है। विश्व की सबसे प्राचीन और विशाल धरोहरों में से एक है। इसमें धर्म, ललित कलाएं, ज्ञान-विज्ञान की विविध विधाएं, नीति, दर्शन, विधि, विधान जीवन प्रणालियां, विभिन्न भाषाओं के साहित्य और वे समस्त कार्य हैं जो इसे महान बनाते हैं। समय-समय पर इसका विविध संस्कृतियों के साथ संघर्ष, मिलन, परिवर्तन, परिवर्धन और आदान-प्रदान हुआ है। इसके विकास में हिंदी भाषा की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका है । भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत देश की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। इस संगोष्ठी में विद्वानों द्वारा भारतीय संस्कृति का स्वरूप, महत्त्व, व्याप्ति, विकास एवं इसकी समृद्धि में हिन्दी भाषा एवं साहित्य की भूमिका के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया जाएगा।

संगोष्ठी के उपविषय हैं :

१. भारतीय संस्कृति का स्वरूप एवं उसका महत्त्व
२. भारतीय संस्कृति की महत्ता एवं उसकी व्याप्ति
३. भारतीय संस्कृति के विकास एवं समृद्धि में हिन्दी भाषा की भूमिका
४. भारतीय संस्कृति की समृद्धि में हिंदी साहित्य की भूमिका
५. भारतीय संस्कृति की समृद्धि में भक्तिकालीन साहित्य की भूमिका
६. भारतीय संस्कृति की समृद्धि में रामकाव्य की भूमिका
७. भारतीय संस्कृति की समृद्धि में कृष्णकाव्य की भूमिका
८. भारतीय संस्कृति की समृद्धि में संत साहित्य की भूमिका
९. भारतीय संस्कृति की समृद्धि में संत कबीर की भूमिका
१०. भारतीय संस्कृति की समृद्धि में सूफी साहित्य की भूमिका
११. भारतीय संस्कृति की समृद्धि में आधुनिक हिंदी काव्य की भूमिका
१२. भारतीय संस्कृति की समृद्धि में आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवियों का अवदान
१३. भारतीय संस्कृति की समृद्धि में भारतेन्दु युग का योगदान
१४. भारतीय संस्कृति की समृद्धि में द्विवेदी युग का योगदान

१५.भारतीय संस्कृति की समृद्धि में छायावाद का अवदान
१६. भारतीय संस्कृति की समृद्धि में हिंदी कथा साहित्य का योगदान
१७.भारतीय संस्कृति एवं हिंदी उपन्यास साहित्य
१८.भारतीय संस्कृति की समृद्धि में हिंदी निबंध साहित्य का योगदान
१९.भारतीय संस्कृति की समृद्धि में हिंदी नाटक साहित्य का योगदान
२०.भारतीय संस्कृति की मूल संवेदना
२१.भारतीय संस्कृति का विश्व बंधुत्व भाव
२२.भारतीय संस्कृति का मूल-सर्वे भवन्तु सुखिन:

संगोष्ठी का उद्देश्य:

1. विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को भारतीय संस्कृति की समृद्धि में हिन्दी भाषा एवं साहित्य की भूमिका से परिचित कराना।
2. उन्हें भारतीय संस्कृति के स्वरूप, महत्त्व एवं उसकी व्यापकता से भली-भांति अवगत कराना।
3. उन्हें हिंदी साहित्य में वर्णित में भारतीय संस्कृति की व्याप्ति की विस्तृत जानकारी देना।
4. उन्हें भारतीय संस्कृति की समृद्धि के प्रमुख आधार विन्दुओं का सविस्तार ज्ञान प्रदान करना।
5. उनको इस विषय के प्रबुद्ध विद्वानों से भारतीय संस्कृति में व्याप्त जीवन मूल्यों की जानकारी प्रदान कर आत्म-विश्लेषण करने हेतु प्रेरित करना।

संगोष्ठी का प्रतिफल:

1. प्रतिभागी भारतीय संस्कृति की समृद्धि में हिन्दी भाषा एवं साहित्य की भूमिका से परिचित हो सकेंगे।
2. वे भारतीय संस्कृति के स्वरूप, महत्त्व और उसकी व्यापकता से अवगत हो सकेंगे।
3. वे हिंदी साहित्य में वर्णित में भारतीय संस्कृति की व्याप्ति की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
4. वे भारतीय संस्कृति की समृद्धि के प्रमुख आधार विन्दुओं का सविस्तार ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. वे भारतीय संस्कृति में व्याप्त जीवन मूल्यों के विषय में जानकर आत्म-विश्लेषण कर सकेंगे।

संरक्षक

The Most Rev बी. के. नायक, मॉडरेटर, CNI Synod, President, JWES
The Rt. Rev पॉल दुपारे, उप मॉडरेटर, CNI Synod, Vice President, JWES
श्री सुब्रतो गोराई, Trustee, JWES
श्री संजय सिंह, Treasurer, JWES & UCNITA

प्रोफेसर ॲना प्रतिमा निकाळजे
प्राचार्या एवं संगोष्ठी अध्यक्ष

डॉ. सत्यवती चौबे , अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, विल्सन महाविद्यालय (स्वायत), मुंबई

संयोजक

डॉ. अमित कुमार, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग, विल्सन महाविद्यालय (स्वायत), मुंबई

सह-संयोजक

सलाहकार समिति

प्रो. शीतला प्रसाद दुबे, कार्याध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई
श्री सचिन निम्बालकर, सह-निदेशक तथा सदस्य सचिव, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई
डॉ. राधिका बिरमोले, समन्वयक, आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ, (स्वायत), मुंबई
डॉ. अनुराधा पेंडसे, उप-प्राचार्य, विल्सन महाविद्यालय, (स्वायत), मुंबई
डॉ. आशीष उज़गरे, उप-प्राचार्य, विल्सन महाविद्यालय, (स्वायत), मुंबई
डॉ. अजीता कुमार, उप-प्राचार्य, विल्सन महाविद्यालय, (स्वायत), मुंबई
श्री महेश शेट्टी, अकादमिक डीन, विल्सन महाविद्यालय, (स्वायत), मुंबई
डॉ. जैमसन मसीह, कोषाध्यक्ष, विल्सन महाविद्यालय, (स्वायत), मुंबई

आयोजक समिति

डॉ. मिशेल फिलिप, अंग्रेज़ी, विभाग प्रमुख
प्रा. रशना पटेल, दर्शनशास्त्र विभाग
प्रा. विनीता मैथ्यू, अंग्रेज़ी विभाग
प्रा. वेरोनिका भोंसले, अंग्रेज़ी विभाग
प्रा. मुनीरा खम्बावाला, समाजशास्त्र, विभाग प्रमुख
प्रा. आरती मन्हेरीकर, इतिहास, विभाग प्रमुख
प्रा. रीटा चेट्टियार, इतिहास विभाग
सुश्री रश्मि सातपुते, मराठी, विभाग प्रभारी
सुश्री जसवंदी मोरे, मराठी विभाग
सुश्री लारेन रेमोस, अर्थशास्त्र, विभाग प्रभारी
सुश्री पूर्णिमा कदम, राजनीति शास्त्र, विभाग प्रभारी
सुश्री जेफ्रीन स्टीफेन, मनोविज्ञान, विभाग प्रभारी

तकनीकी सहायक

प्रा. श्रीलता रत्नम, आई. टी. विभाग प्रभारी
प्रा. प्रांजलि व्यास, दर्शनशास्त्र विभाग प्रभारी

कार्यक्रम की रूपरेखा

पंजीकरण एवं जलपान (सुबह 8.45 बजे से 9.45 बजे तक)

उद्घाटन-सत्र (सुबह 10.00 बजे से 11.00 बजे तक)

महाराष्ट्र गीत: जय जय महाराष्ट्र माझा

दीप प्रज्ज्वलन एवं ईश्वर वन्दना:

प्रस्ताविकी एवं अतिथि परिचय: डॉ. सत्यवती चौबे, संयोजक

स्वागत वक्तव्य : प्रो. ॲना प्रतिमा निकाळजे, प्राचार्या, विल्सन महाविद्यालय, मुंबई

अध्यक्ष : प्रो. शीतला प्रसाद दुबे, कार्याध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई

बीज वक्तव्य : प्रो. श्रीराम परिहार, सुप्रसिद्ध साहित्यकार, सेवानिवृत्त प्राचार्य, खंडवा, मध्य प्रदेश

विशिष्ट अतिथि: प्रो. अवधेश कुमार, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

संचालन: डॉ. सत्यवती चौबे, संयोजक, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, विल्सन महाविद्यालय, मुंबई

प्रथम-सत्र (सुबह 11.00 बजे से)

अध्यक्ष: प्रो. श्रीराम परिहार, सुप्रसिद्ध साहित्यकार, सेवानिवृत्त प्राचार्य, खंडवा, मध्य प्रदेश

सम्मानित अतिथि: डॉ. सतीश पाण्डेय, पूर्व अधिष्ठाता, भाषा एवं साहित्य संकाय, सोमैया महाविद्यालय

विशिष्ट अतिथि: प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय, वरिष्ठ प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुम्बई

विशिष्ट अतिथि: डॉ. संतोष कॉल काक, प्राचार्या, बी. एम. रुइया गर्ल्स महाविद्यालय, मुंबई

मुख्य वक्ता:

डॉ. उमेशचंद्र शुक्ल, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, महर्षि दयानंद सरस्वती महाविद्यालय

डॉ. मिथिलेश शर्मा, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, झुनझुनवाला महाविद्यालय, मुंबई

डॉ. भगवती उपाध्याय, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, संत ज़ेवियर्स महाविद्यालय, मुंबई

डॉ. अनंत द्विवेदी, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, साकेत महाविद्यालय, कल्याण

संचालन: डॉ. उषा दुबे, सहायक प्राध्यापिका, हिंदी-विभाग, महर्षि दयानंद सरस्वती महाविद्यालय, मुंबई

आभार ज्ञापन: डॉ. अजीत कुमार राय, सहायक प्राध्यापक, के. सी. महाविद्यालय, मुंबई

भोजनावकाश (दोपहर 1.00 बजे)

द्वितीय-सत्र (दोपहर 2.00 बजे)

अध्यक्ष: प्रो. अवधेश कुमार, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

विशिष्ट अतिथि: प्रो. सुनील कुमार द्विवेदी, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, उत्तर बंग विश्वविद्यालय, दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल।

मुख्य वक्ता:

डॉ. रमा सिंह, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, महाराष्ट्र महाविद्यालय, मुंबई

डॉ. पल्लवी प्रकाश, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, एस. एन. डी .टी. विश्वविद्यालय, मुंबई

डॉ. राम कृपाल जी, भारतीय भाषा विभाग, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

डॉ. संध्या गर्जे, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, मुक्त विद्यापीठ, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

डॉ. अमित कुमार, सहायक प्राध्यापक, हिंदी-विभाग, विल्सन महाविद्यालय, मुंबई

डॉ. वैशाली पाचुन्दे, सहायक प्राध्यापिका, हिंदी-विभाग, सोफिया महाविद्यालय, मुंबई

संचालन: श्री राकेश त्रिपाठी, परियोजना समन्वयक, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, मुंबई

आभार ज्ञापन: श्रीमती सुनीता चौहान, हिंदी-विभाग, विल्सन महाविद्यालय, मुंबई

समापन सत्र (3.30 बजे से)

विशिष्ट अतिथि: प्रो. अनिल सिंह, डीन, मानविकी संकाय, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

मुख्य अतिथि: प्रो. शीतला प्रसाद दुबे, कार्याध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई

प्राचार्या: प्रो. ॲना प्रतिमा निकाळजे, प्राचार्या, विल्सन महाविद्यालय, मुंबई

सम्मानित अतिथि: डॉ. उषा मिश्र, पूर्व अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, एम. एम. शाह महिला महाविद्यालय, मुंबई

अभिमत: २ विद्यार्थी / शोधार्थी

आभार ज्ञापन: डॉ. सत्यवती चौबे, संयोजक, अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, विल्सन महाविद्यालय, मुंबई

राष्ट्रगान

****